प्रूडेंस क्रैंडल

सामान अधिकारों की लड़ाई लड़ने वाली टीचर

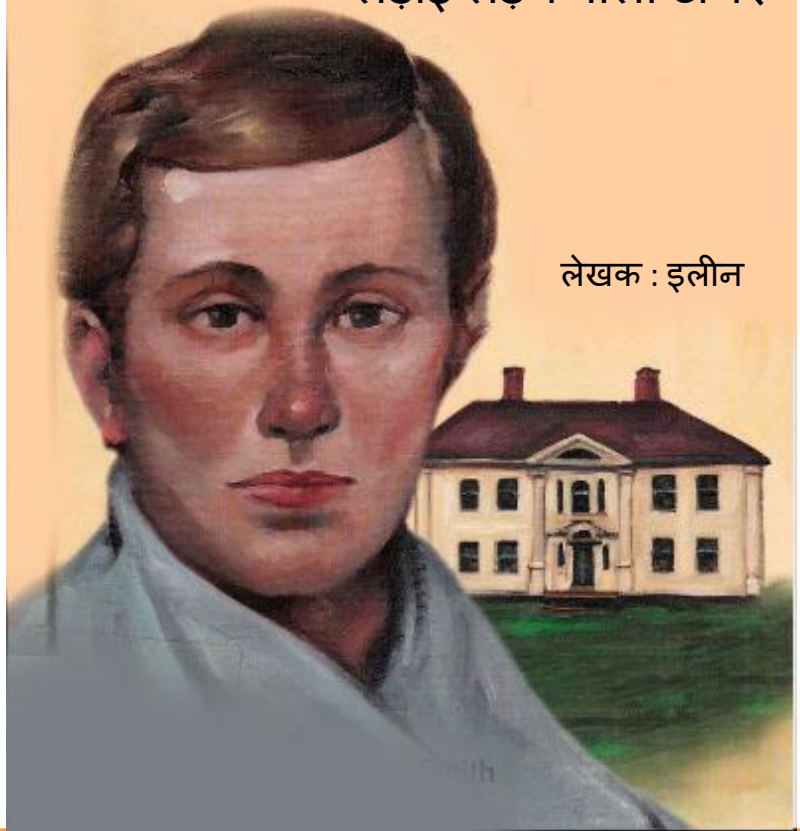

लेखक : इलीन

नोट

यह कहानी 1832 में शुरू होती है. उस समय अमरीका के दक्षिण में, अधिकांश अश्वेत गुलामों जैसे रहते थे. मालिक,गुलामों को अपनी संपत्ति मानते थे. मालिक, गुलामों से बहुत ज़्यादा काम कराते थे. ज़्यादातर गुलामों को पर्याप्त खाने को भी नहीं मिलता था. गुलाम अपनी मर्ज़ी के मुताबिक इधर-उधर आ-जा नहीं सकते थे. यह कहानी उत्तरी अमरीका की है, जहाँ गुलामी गैर-कानूनी थी. पर उत्तरी अमरीका के अश्वेतों को भी, गोरों के अधिकार प्राप्त नहीं थे. कुछ गोरे नहीं चाहते थे कि स्कूलों में, अश्वेत बच्चे, गोरे बच्चों के साथ-साथ पढ़ें. वे अश्वेत बच्चों के लिए अलग स्कूल खोलने के भी खिलाफ थे. इन लोगों का मानना था कि गोरे और अश्वेत न एक-साथ खा सकते थे, न शहर के एक मोहल्ले में एक-साथ रह सकते थे, और न ही एक-साथ चर्च में बैठ सकते थे.

पर कुछ लोगों को यह सोच गलत लगता था. उनमें से एक थीं - प्रूडेंस क्रैंडल. वो एक गोरी टीचर और क्वेकर थीं. क्वेकर समुदाय हमेशा से युद्ध और सामाजिक नाइंसाफी के खिलाफ था. क्वेकर अच्छी शिक्षा को बहुत महत्व देते थे. प्रूडेंस क्रैंडल चाहती थीं कि हरेक बच्चे को स्कूल जाने का अवसर मिले. यह कहानी उनके संघर्ष की कहानी है - उन्होंने हरेक बच्चे को स्कूल भेजने का भरसक प्रयास किया.

नवम्बर 1832

प्रूडेंस क्रैंडल ने दरवाज़ा खोला
और फिर वो बड़े मैदान में अंदर घुसी.
उसने कैंटरबरी फीमेल बोर्डिंग स्कूल को
एक गर्व की नज़र से देखा.
उसकी छात्राएँ कैंटरबरी, कनेक्टिकट,
और अन्य शहरों की लड़कियां थीं.

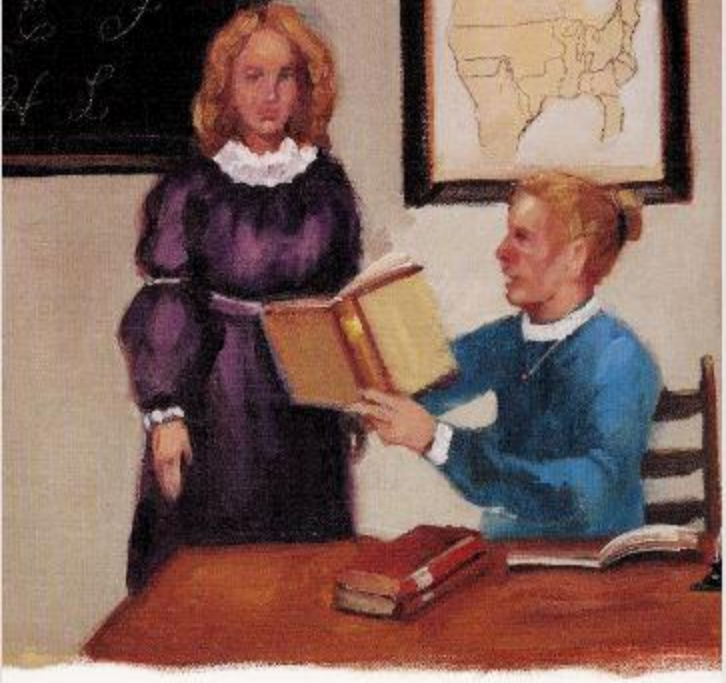

कुछ लड़कियां स्कूल
रोज़ चलकर आती थीं.
बाकी स्कूल में ऊपर ही रहती थीं,
क्योंकि उनके घर बहुत दूर थे.
प्रूडेंस, उन लड़कियों को
पढ़ना और भूगोल सिखाती थीं.

वो उन्हें सिलाई और
अच्छा आचरण भी सिखाती थीं.
प्रूडेंस जो कुछ को सिखाती थीं
उससे लड़कियों के माँ-बाप बहुत खुश थे.
कुछ का मानना था, कि पूरे राज्य में
वो सबसे अच्छा स्कूल था.

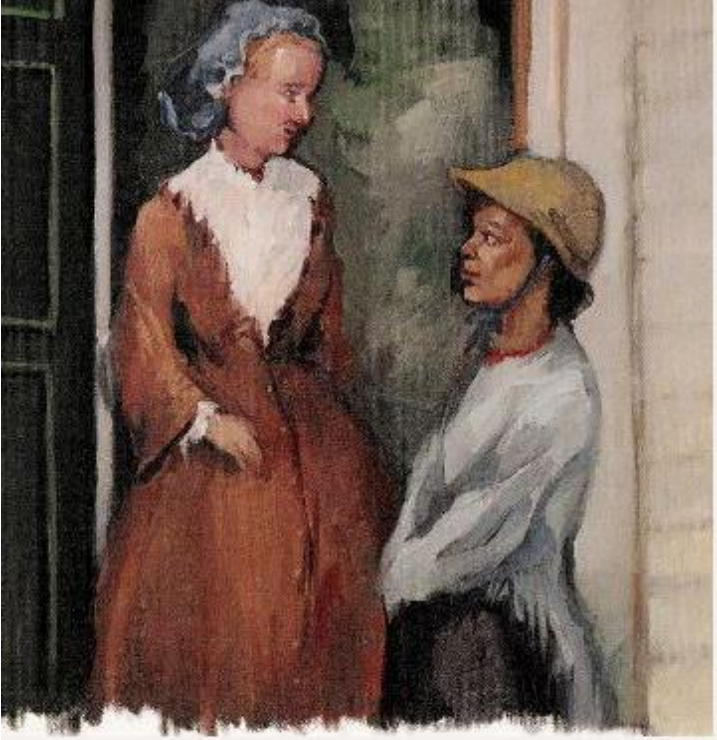

एक दिन प्रूडेंस से
एक लड़की मिलने आई.
साराह हैरिस उससे पहले
कई स्कूलों में गई थी.
वो अक्सर अपनी मित्र मारिया के पास आती थी.
मारिया, प्रूडेंस के लिए काम करती थी.

पर इस बार साराह,
प्रूडेंस से कुछ बात करने आई थी.
जब साराह छोटी थी
तो वो एक स्थानीय स्कूल में पढ़ी थी.
न्यू-इंग्लैंड के कुछ स्कूलों में
गोरे और अश्वेत छोटे बच्चे
एक-साथ स्कूल में पढ़ सकते थे.
बड़े गोरे बच्चे
केवल गोरों के स्कूलों में ही पढ़ सकते थे.
पर बड़े अश्वेत बच्चों के लिए
ऐसे स्कूल बहुत कम थे.
साराह के स्कूल के कुछ साथी
अब प्रूडेंस के स्कूल में पढ़ रहे थे.
अब साराह भी प्रूडेंस के स्कूल
में पढ़ना चाहती थी.
साराह का सपना था,
एक दिन अन्य अश्वेत बच्चों को पढ़ाना.

प्रूडेंस ने साराह की पूरी बात सुनी
पर उस समय उसने उसे
कोई निश्चित उत्तर नहीं दिया.
प्रूडेंस जानती थी - शहरवासी चाहते थे
कि वो सिर्फ गोरे बच्चों को ही पढ़ाए.
कई हफ़्तों तक प्रूडेंस सोचती रही.
वो आखिर क्या करे?
जब लोगों के साथ नस्ल या रंग के कारण
अन्याय होता तो वो प्रूडेंस को बिल्कुल
अच्छा नहीं लगता था.
प्रूडेंस एक क्वेकर थी.
क्वेकर, ईमानदारी और सबके साथ
न्याय में यकीन रखते थे.
प्रूडेंस ने साराह को पढ़ाने का निश्चय किया.

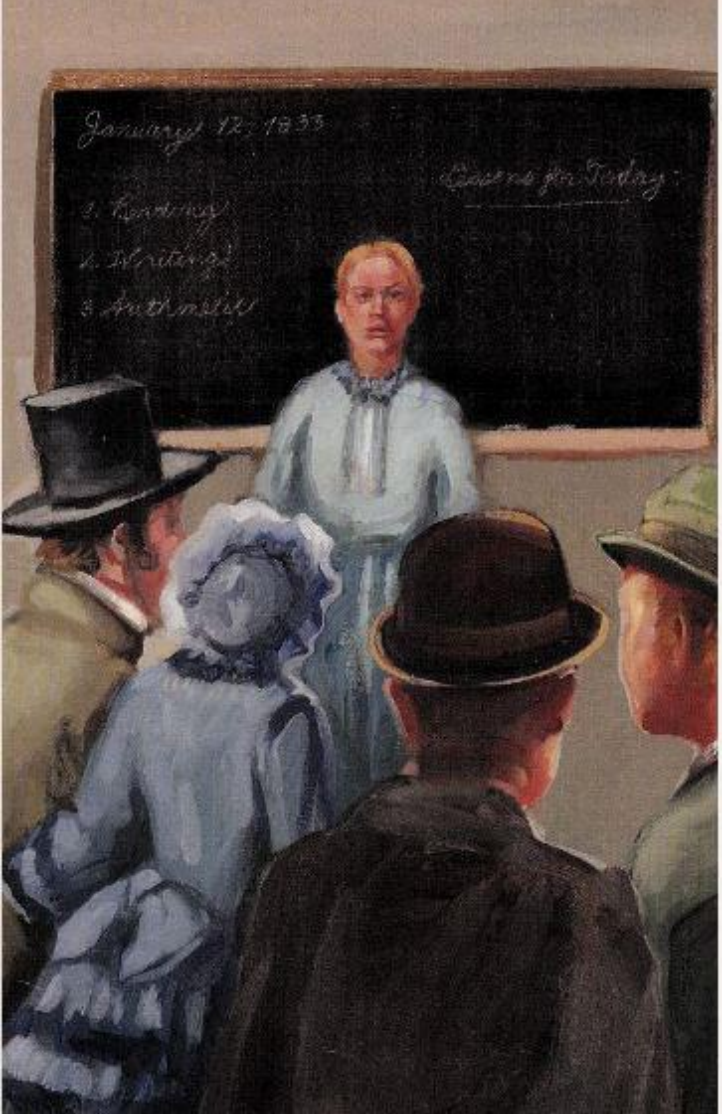

जनवरी 1833

प्रूडेंस के इस निर्णय से
शहर के लोग बहुत गुस्सा हुए.
स्कूल की लड़कियों के माँ-बाप का
एक समूह, प्रूडेंस से मिलने आया.
वे नहीं चाहते थे कि कोई अश्वेत लड़की
उनके गोरे बच्चों के साथ पढ़े.
वे चाहते थे कि साराह स्कूल छोड़ दे.
अगर प्रूडेंस ने वो नहीं किया
तो वे अपनी लड़कियों को स्कूल
से निकाल लेंगे.
उनकी लड़कियों की फीस के बिना
प्रूडेंस का स्कूल बंद हो जायेगा.
"कोई बात नहीं, स्कूल को बंद हो जाने दो,"
प्रूडेंस ने उनसे कहा.
"मैं साराह को स्कूल से नहीं निकालूंगी."

उसके बाद कई लड़कियों के पालकों ने
उन्हें प्रूडेंस के स्कूल ने निकाल लिया.
स्कूल के बंद होने की अब पूरी सम्भावना थी.
आगे वो क्या करेगी, प्रूडेंस ने उसके बारे में सोचा.

अश्वेत बच्चों स्कूल में नहीं पढ़ाना
प्रूडेंस को न्यायसंगत नहीं लगा.
फिर प्रूडेंस ने स्कूल बंद
करने का पक्का मन बनाया.
और उसने युवा, अश्वेत लड़कियों के लिए
एक नया स्कूल खोलने की बात सोची.

उसके बाद प्रूडेंस बोस्टन गई
और वहां एक मशहूर अबोलिशनिस्ट
विलियम ल्यॉड गैरिसन से मिली.
अबोलिशनिस्ट, गुलामी के खिलाफ थे.
वे मानते थे कि मुक्त अश्वेत लोगों
के साथ सबको न्यायसंगत बर्ताव करना चाहिए.
विलियम ल्यॉड गैरिसन ने
प्रूडेंस की बातें ध्यान से सुनीं.
फिर वो प्रूडेंस के स्कूल के लिए
अश्वेत छात्र खोजने के लिए राजी हुए.
प्रूडेंस ने कई अन्य शहरों की यात्रा की
और लोगों को अपने नए स्कूल के
बारे में बताया.
उसके बाद वो कैंटरबरी वापिस लौटी.
उसने अपनी गोरी लड़कियों को बताया
कि उनका स्कूल जल्द ही बंद होने वाला था.
उसने उन्हें अपने नए स्कूल के
बारे में भी बताया.

शहर के लोगों को
यह खबर सुनकर भारी धक्का लगा.
शहरवासियों ने एक बैठक बुलाई.
उन्होंने कहा कि अश्वेत लड़कियों के स्कूल से
उनका शहर - कैंटरबरी बरबाद हो जायेगा.

पास के शहर के एक पादरी ने
प्रूडेंस के पक्ष में बोलने की कोशिश की.
उनका नाम था रेवरेंड सामुएल मे.
पर शहरवासियों ने पादरी की
एक बात नहीं सुनी.
उन्होंने अपना मन बना लिया था.
वो नए स्कूल को तोड़ डालेंगे.

अप्रैल 1833

प्रूडेंस ने अपना नया स्कूल अप्रैल में खोला.
अश्वेत लड़कियां, कनेक्टिकट और
आसपास के राज्यों से पढ़ने आईं.
एक अच्छे स्कूल में दाखिला
मिलने से छात्राएं खुश थीं.
पर कैंटरबरी ने लोगों ने
नई छात्राओं का स्वागत नहीं किया.
दुकानदारों ने नई छात्राओं और स्कूल को
सामान नहीं बेंचा.
जब लड़कियां बीमार पड़ीं तब शहर के डॉक्टर ने
उनका इलाज करने से मना किया.
चर्च ने अश्वेत लड़कियों को
गिरजाघर में घुसने नहीं दिया.
जब लड़कियां शहर में घूमने जातीं
तब लड़के उनके मुंह के ऊपर भोंपू बजाते.
लोग, लड़कियों पर पत्थर और कीचड़ फेंकते.

पर प्रूडेंस और उसकी लड़कियों
ने इस सबसे हार नहीं मानी.
प्रूडेंस ने सामान मंगवाने का एक अन्य जरिया ढूँढा.
अब उसका एक मित्र दूसरे शहर से
उनके लिए सामान खरीद कर लाता.
लड़कियों ने दूसरे चर्च खोजे,
जहाँ उनका खुले दिल स्वागत हुआ.

प्रूडेंस ने लड़कियों की बहादुरी की बहुत प्रशंसा की.
शहर के गोरे लोग,
अश्वेत लड़कियों से घृणा करते थे.
पर लड़कियाँ उनके तानों को
हमेशा अनदेखा करती थीं.
लड़कियां, अपना सारा ध्यान पढ़ाई में लगाती थीं.

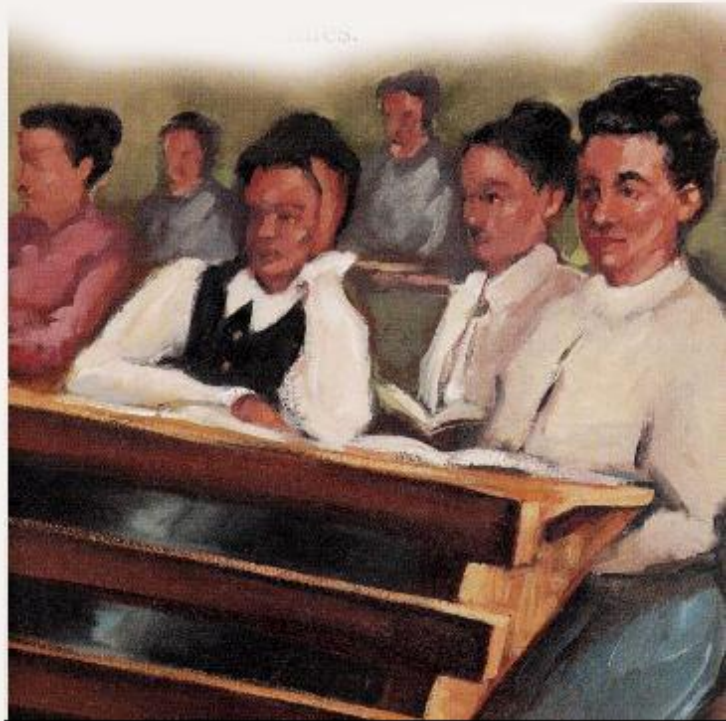

अभी भी कैंटरबरी के लोग
प्रूडेंस के स्कूल को बंद करवाना चाहते थे.
उसके लिए उन्होंने अपने राज्य के
नेताओं की मदद मांगी.
मई 1833 में कनेक्टिकट ने "ब्लैक-कानून" पारित किया.
इस कानून के तहत कोई भी स्कूल
बिना स्थानीय लोगों की अनुमति के दूसरे राज्यों
के अश्वेत छात्रों को दाखिल नहीं कर सकता था.

इस नए कानून के बाद
कैंटरबरी ने लोगों ने खुशियां मनाईं, जश्न मनाया.
उन्होंने चर्च में घंटियां बजायीं
और ख़ुशी में तोप भी दागी.
लोगों को लगा कि अब प्रूडेंस
अपना स्कूल बंद कर देगी.
पर प्रूडेंस ने नए क़ानून की
बिल्कुल परवाह नहीं की.

जून 1833

गर्मियों में एक दिन
किसी ने स्कूल के दरवाजा खटखटाया.
शहर का शेरिफ, प्रूडेंस को
गिरफ्तार करने आया था.
प्रूडेंस ने "ब्लैक-कानून" का उल्लंघन किया था.
अब प्रूडेंस को पेनल्टी देनी होगी.
पेनल्टी नहीं देने पर
उसे जेल जाना होगा.
प्रूडेंस लोगों को दिखाना चाहती थी
कि "ब्लैक-कानून" सरासर गलत था.
इसलिए उसने पेनल्टी देने से इंकार किया.
उससे लोगों को पता चलता कि अन्यायपूर्ण
"ब्लैक-कानून" से प्रूडेंस कितनी नाखुश थी.
फिर प्रूडेंस, शेरिफ के साथ जेल गई.

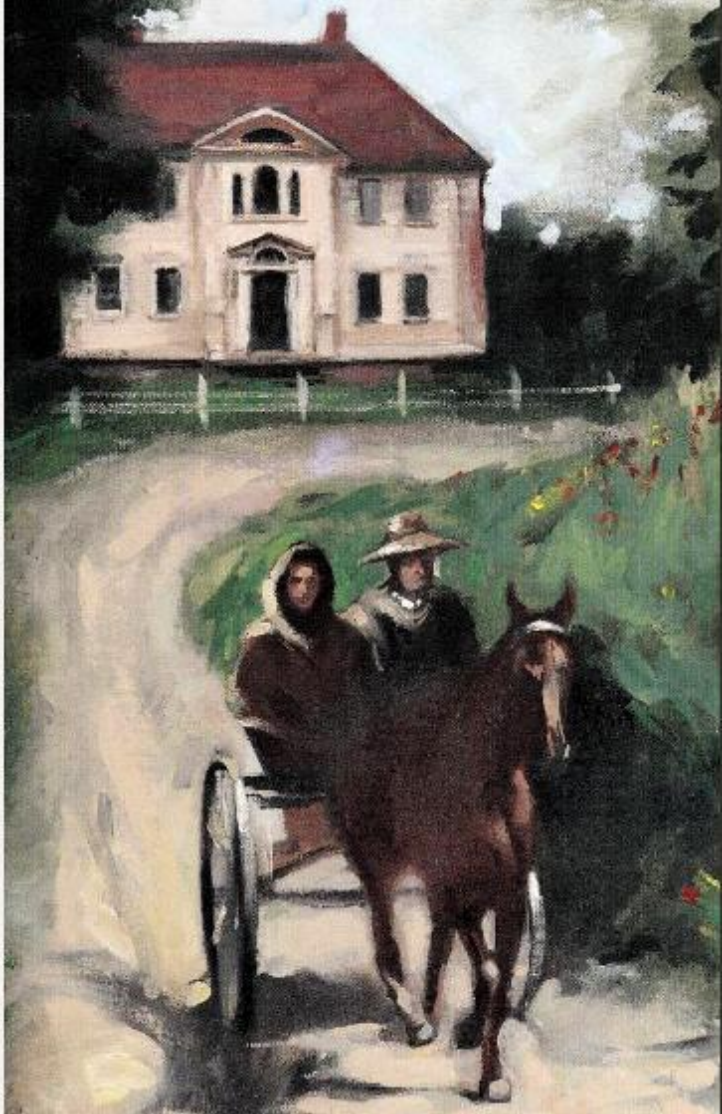

रेवेरेनेड मे ने पूछा,
"क्या तुम जेल जाने से घबरा रही रही हो?"
"बिलकुल नहीं!" प्रूडेंस ने कहा.
"मुझे डर है कि वो मुझे जेल में नहीं डालेंगे."
प्रूडेंस को अनेकों कहानियां याद आईं
जब क्वेकर्स को अपने उसूलों के लिए
पीड़ित होना पड़ा था. इन विचारों से उसे बल मिला.

"ठक्क!" करके जेल का दरवाज़ा बंद हुआ.
प्रूडेंस को जेल की कोठरी में बंद किया गया.
अगले दिन रेवेरेनेड में ने पेनल्टी चुकाई.
फिर प्रूडेंस अपने स्कूल वापिस आई.
पर क्योंकि उसने कानून तोड़ा था
इसलिए अगस्त में उसे कोर्ट-कचेहरी में पेश होना था.

उसके बाद से शहरवासी
प्रूडेंस से और अधिक घृणा करने लगे.
उन्होंने खिड़कियों में से स्कूल के अंदर
पत्थर और सड़े अंडे फेंके.

बाद में किसी ने स्कूल के कुँए में
ढेर सारा कचरा फेंका.
फिर लड़कियां कुएं का गन्दा पानी नहीं पी पाईं.
फिर प्रूडेंस के पिताजी उनके लिए
अपने फार्म से पीने का पानी लेकर आये.

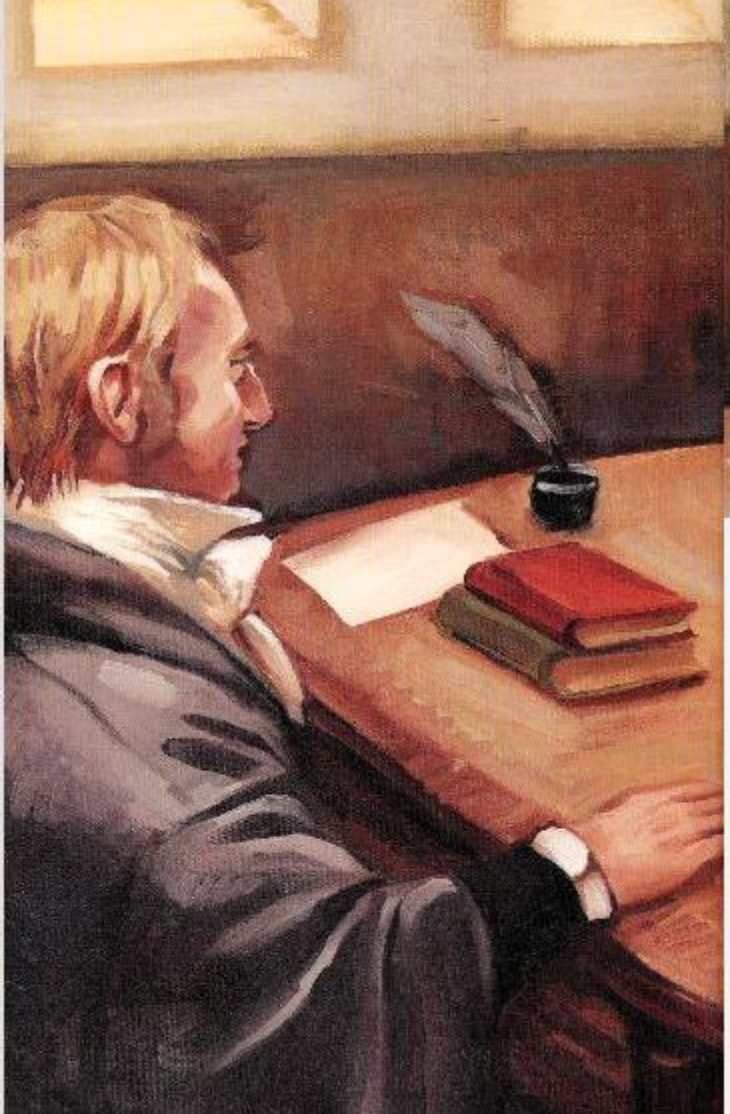

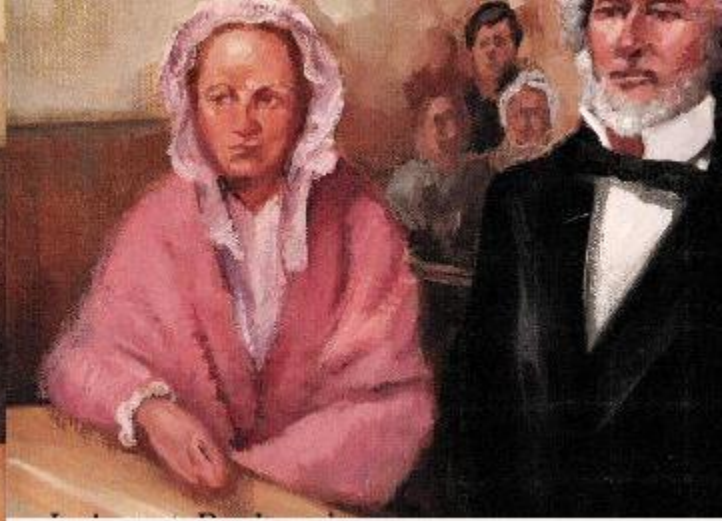

अगस्त में प्रूडेंस की
पेशी की तारीख आई.
कैंटरबरी के शहरवासियों से
कोर्ट का हाल खचाखच भरा था.
पर उनमें प्रूडेंस के भी कुछ मित्र थे.
प्रूडेंस का एक अबोलिशनिस्ट मित्र
आर्थर टप्पन न्यू-यॉर्क से प्रूडेंस की
मदद करने आए थे.
उन्होंने प्रूडेंस के वकील की फीस दी.

कैंटरबरी के लोगों ने कहा कि
प्रूडेंस के स्कूल ने कनेक्टिकट
का कानून तोड़ा था.
प्रूडेंस के मित्रों ने कहा कि
वो कानून ही अन्यायपूर्ण था.
कौन सही था और कौन गलत
कोर्ट कोई भी निर्णय नहीं ले पाया.
इसलिए प्रूडेंस को अक्टूबर में
दुबारा पेशी के लिए बुलाया गया.
इस बार कोर्ट ने प्रूडेंस को
क़ानून तोड़ने का दोषी पाया.
प्रूडेंस के वकीलों ने दूसरी जांच की मांग की.
यह साबित करने के लिए
कानून अन्यायपूर्ण था,
वो एक और मौका चाहते थे.
फिर वकीलों ने प्रूडेंस के केस
की अच्छी तरह से तैयारी की.

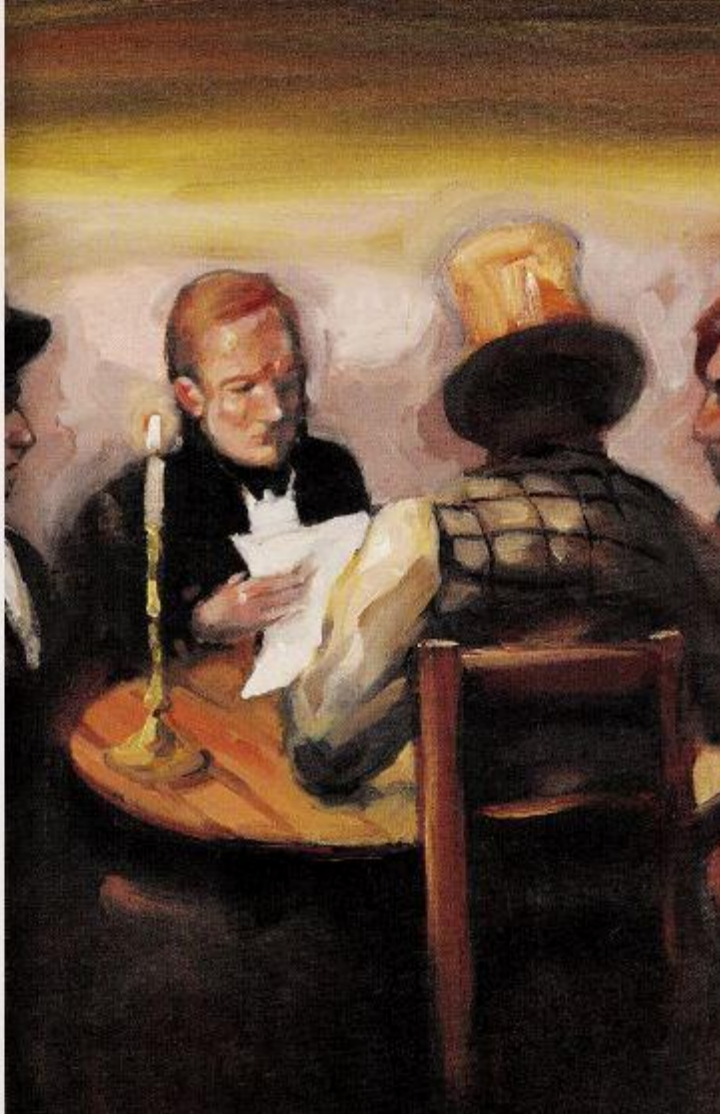

शहर के लोग स्कूल के साथ
लगातार लड़ते रहे.
फिर एक ठंडी जनवरी की दोपहर में
लड़कियों को स्कूल में से कुछ
जलने की खुशबू आई.
उसके बाद पूरा स्कूल धुएं से भर गया.
कोई चिल्लाया, "आग की घंटी बजाओ!"

कैंटरबरी के लोग
आग बुझाने आये.
वे स्कूल से नफरत करते थे
पर वे नहीं चाहते थे कि
उनका शहर जलकर ख़ाक हो जाए.
कुछ मरम्मत के बाद
स्कूल फिर सुरक्षित हो गया.

जुलाई 1834

कुछ महीनों बाद
प्रूडेंस की फिर कोर्ट में पेशी हुई.
पर इस बार भी कोर्ट कोई
निर्णय नहीं ले पाया.
कौन जीता, कौन हारा?
यह कहना मुश्किल था.

प्रूडेंस के वकील ने उससे कहा
कि वो अपना स्कूल चालू रख सकती थी.
प्रूडेंस अपने छात्रों के लिए खुश थी.
पर वो चाहती थी कि
कोर्ट उस अन्यायपूर्ण
"ब्लैक कानून" को रद्द करे.

कोर्ट की पेशियों के दौरान प्रूडेंस की
कैल्विन फिल्लो नाम के आदमी से भेंट हुई.
वो न्यू-यॉर्क में एक पादरी था.
प्रूडेंस और कैल्विन के बीच प्रेम हो गया.

जब कैल्विन ने प्रूडेंस के सामने
विवाह का प्रस्ताव रखा तो
प्रूडेंस ने हामी भर दी.
कोर्ट की आखिरी पेशी के बाद
प्रूडेंस और कैल्विन का विवाह हुआ.
पर स्कूल में अभी बहुत काम बाकी था.
इसलिए प्रूडेंस को वापिस स्कूल लौटना पड़ा.

9 सितम्बर 1834

उस रात को प्रूडेंस और उसके
छात्रों को कांच टूटने की आवाज़ आई.
उन्होंने देखा कि लोग लोहे की सलाखों
से उनके स्कूल की खिड़कियां तोड़ रहे थे.

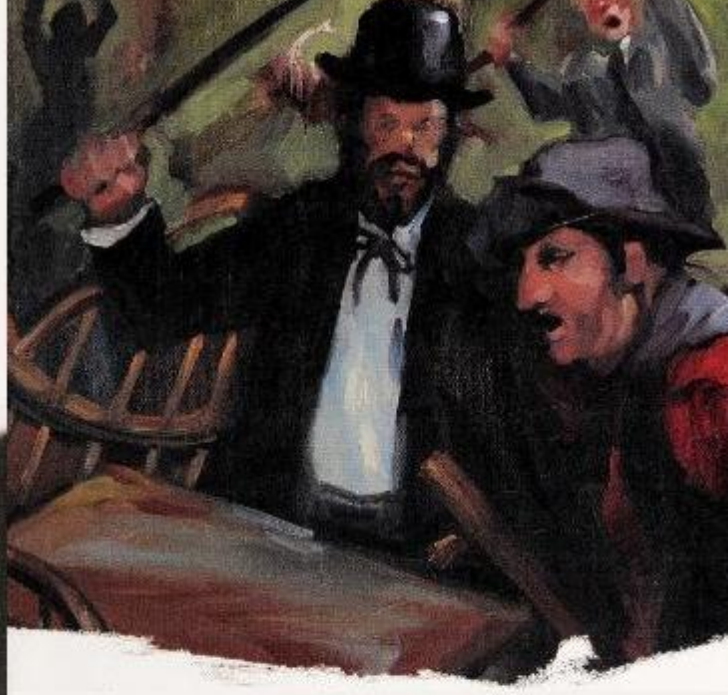

फिर कुछ आदमी टूटी खिड़कियों में से
स्कूल के अंदर घुसे और उन्होंने फर्नीचर तोड़ा.
इतनी खराब वारदात इससे पहले कभी नहीं हुई थी.
प्रूडेंस को डर था कि कहीं अगली बार
वो लड़कियों को कोई चोट न पहुंचाएं.
अब तकलीफ हद से ज़्यादा बढ़ चुकी थी.

अगले दिन प्रूडेंस ने स्कूल बंद कर दिया.
रेवरेंड मे, उसकी मदद करने आए.
उन्होंने कहा, "मैं कैंटरबरी, कनेक्टिक
और अपने देश के लिए वाकई शर्मिंदा हूँ."

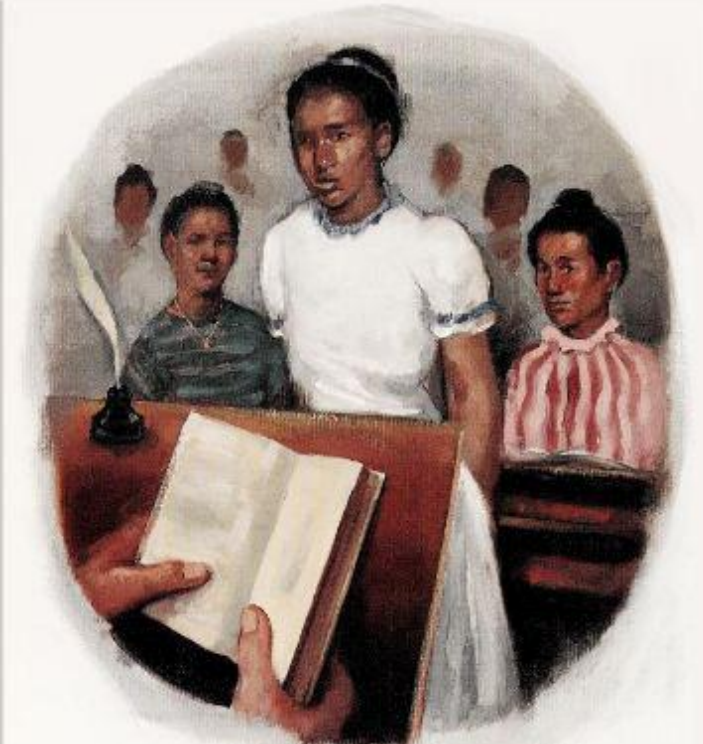

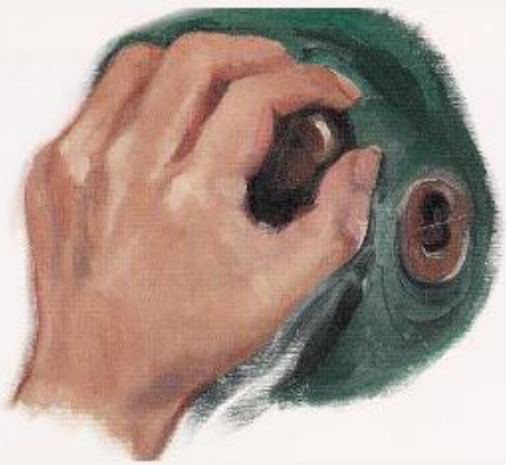

प्रूडेंस भी दुखी थी.
पर उसे अपने संघर्ष का गर्व भी था.
वो अपनी छात्राओं के चेहरों
को कभी नहीं भूलेगी.
उसे उनके चेहरों की ख़ुशी
हमेशा याद रहेगी.
जब उसने स्कूल को बंद किया
तो उसे अच्छी तरह पता था
कि स्कूल शुरू करके उसने
एक नेक और अच्छा काम किया था.

अंत के शब्द

प्रूडेंस क्रैंडल ने अपना स्कूल बेंच दिया और फिर अपने पति के पास न्यू-यॉर्क चली गई. 1938 में कनेक्टिकट में "ब्लैक-कानून" रद्द हुआ. जिन लोगों ने शुरू में वो कानून पारित किया था उनमें से कुछ ने माना कि वो कानून अन्यायपूर्ण था. कुछ समय के लिए प्रूडेंस फिर कनेक्टिकट आई पर अंत में वो केंसास में जाकर बस गई.

सामान शिक्षा की लड़ाई लड़ने वाली टीचर्स में प्रूडेंस पहली और अगुआ थी. प्रूडेंस के प्रयासों के कारण बाकी लोग, बाद में बहुत कुछ हासिल कर पाए. 1867 में वाशिंगटन डी सी. में होवार्ड यूनिवर्सिटी स्थापित हुई जो सिर्फ अश्वेत छात्रों के लिए थी. 1881 में जब अश्वेत छात्रों के लिए बुकर टी. वाशिंगटन ने टस्कजी इंस्टिट्यूट की स्थापना की तो यह खबर सुनकर प्रूडेंस बहुत प्रसन्न हुई.

1890 में प्रूडेंस का देहांत हुआ. प्रूडेंस के कई पुराने छात्रों ने उसके काम को ज़ारी रखा और आगे बढ़ाया. साराह हैरिस आगे जाकर खुद टीचर बनी और उसने अश्वेत छात्रों को पढ़ाया. बात काफी आगे बढ़ी. फिर भी अश्वेत छात्रों के पास गोरों की तुलना में कम और पुरानी किताबें ही होती थीं. अश्वेत छात्रों के स्कूलों में पढ़ाने वाले टीचर्स को बहुत मुश्किल परिस्थितियों में काम करना पड़ता था. फिर 1954 में अमरीका के सुप्रीम कोर्ट ने गोरे और अश्वेत छात्रों एक लिए अलग-अलग स्कूलों पर रोक लगाईं. अपने स्कूल में साराह हैरिस को दाखिला देकर प्रूडेंस ने अमेरिका में सब के लिए सामान शिक्षा की ओर पहला महत्वपूर्ण कदम रखा था.

समाप्त